न्यामतसिंह रचित जैन ग्रन्थ माला-अङ्क २

( न्यामत विलास- २ )

# जैन भजन रत्नावली

१

( चाल )-अड़िल छंद ॥

विमल बोध दातार जगत हितकार हो ।
मंगल रूप अनूप परम सुखकार हो ॥
अश्वसेन कुल चंद पार्श्व हृदय वसो ।
न्यामत का अज्ञान विघ्न संशय नसो ॥१॥

२

( राग ) कव्वाली ( ताल ) कहरवा ( चाल ) कत्ल मत करना मुझे तेगों नज़र से देखना ॥

अपनी ग़फ़लत से जिया तू आप दुखयारों में है ।
जैसे मकड़ी कैद अपने जाल के तारों में है ॥ १ ॥

## २

सच्चिदानंद रूप अपना तो कभी देखा नहीं ।
हैफ़ झूठी मूरतों के तू ख़रीदारों में है ॥ २ ॥
इन्द्रियों के भोग दुखदाई तुझे आए पसंद ।
जिसके कारण देख तू दुनिया के बीमारों में है ॥ ३ ॥
मनुष भव जिनराज शासन जैन कुल तुझको मिला ।
न्यामतें सबसे ग़ाफ़िल मत तू होशियारों में है ॥४॥

## ३

(राग) इन्द्रसभा (ताल) दादरा (चाल) घर से यहाँ कौन
खुदा के लिये लाया मुझको ।

शान्त मुद्रा का प्रभू दर्श दिखादो मुझको ।
कैद दुनिया से दया करके छुड़ा दो मुझको ॥१॥
काल अनादि से चहुं गति में भ्रमता हूं मैं ।
मोक्ष मारग में प्रभू जल्दी लगादो मुझको ॥ २ ॥
यह करम बैरी भवोदधि में रुलाते हैं मुझे ।
कर्म को काटके शिवपुर में पहुंचादो मुझको ॥ ३ ॥
मोह सागर में पड़ी आनके नैय्या मेरी ।
आप हितकारी हैं हित करके लंघा दो मुझको ॥४॥
जब तलक मुक्ति न हो अर्ज़ यही न्यामत की ।
दर्श अपना प्रभू भव भव में दिखादो मुझको ॥५॥

४

( राग ) संकीर्ण भैरवी ( ताल ) कहरवा ( चाल ) छोरटिया
आगी बोली जी मरके दे डाल नीर।

कब आवेगी ना जाने म्हारी लब्धी काल ( टेक )
मैं निगोद चलकर आया त्रस थावर में भरमाया।
भवदधि में गोता खाया जी हो करके बेहाल ॥ १ ॥
कहीं नर्क पशू गति पाई कहीं लई स्वर्ग गति जाई।
पर समकित कहीं नहीं आई जी कर्मन के जंजाल ॥२॥
जब भटक भटक मैं हारो. तब दुर्लभ नर भव धारो।
यहां भी नहीं कारज सारो जी मैं फंसा मोह के जाल ॥३॥
भव भव में जो दुख पायो, नहीं मुख से जाय सुनायो।
अब शिव मारग दर्शादो जी, तुम दीन दयाल ॥४॥
तुम सुखकारी हितकारी, सब जीवन दुख परिहारी।
अब लीनी शरण तिहारी जी, न्यामत का दुख टाल ॥५॥

५

( राग ) नाटक छाया लगत भैरवी ( ताल कहरवा )

भगवत की बानी पे श्रद्धान लाग्यो
तिहुं जग का भान है, सच्चा सुज्ञान है।
केवल प्रमान है, सब से महान है ॥ भगवत की० ॥ टेक ॥

ऐसी यह जिन वानी है, भव भव में यह सुखदानी है
सारे जगत के जीवों ने तक़रीर याकी मानी है।
अन्य मत की वातों पे प्यारे ना जाइयो ॥ भग०॥१॥
( दोहा ) नैय्यायक मीमांसक, बौद्ध शैव जो होय।
स्याद्वाद के सामने, ठहर सके ना कोय।
षट मत में सार है, सबकी हितकार है
शिवपद दातार है, न्यामत बलिहार है
चर्णों में माता के सरको झुकाइयो ॥ भग० ॥२॥

६

( चाल ) चौपाई १६ मात्रा ( चोवीस जिनेन्द्र स्तुति )
वंदू पंच परम पद दानी। वंदू मात श्रीजिन वानी ॥
वंदू जिन मारग सुख रूपा।
जिन प्रतिमा जिन भवन अनूपा ॥१॥
यह नव पद वंदूं शिर नाई।
मंगलीक भव भव सुखदाई ॥
जय श्रीऋषभ सुनाभ कुमारा।
तारण तरण भवदधी पारा ॥२॥
जय श्रीअजित अजित पद धारी।
तोड़ा कर्म कुलाचल भारी॥

जय शंभव स्वयंभू भगवाना ।
अतुल शक्ति दर्शन सुखज्ञाना ॥३॥
जय अभिनंदन अभय पद दाता ।
तिलक त्रिलोक नाथ जग त्राता ॥
जथ श्री सुमति सुमति परकाशी ।
ज्योति स्वरूप अलख अविनाशी ॥४॥
जय श्री पद्म पद्म पद सोहै ।
देखत त्रि भुवन जन मन मोहै ॥
जय सुपार्श्व तुम शिवपुर राई ।
अक्षय ऋद्धि अक्षय पद दाई ॥५॥
जय श्रीचंद्सेन नृप नंदा ॥
चित चकोर तुम चर्णन चंदा ॥
जय श्री पुष्पदंत भगवंता ।
ले छियालीस भये भगवंता ॥६॥
जय शीतल शीतल गुणधारी ।
क्रोध मोह मद लोभ निवारी ॥
जय श्रेयांस मिथ्यात विनाशी ।
द्वादशांग वाणी परकाशी ॥७॥
जय श्री वासुपूज्य जग ईशा ।
सेवें पद सुर ईश मुनीशा ॥

जय श्री विमल विमल करतारा ।

अष्ट करम कल मल हरतारा ॥८॥

जय अनंत भगवंत जिनेशा ।

परम ब्रह्म ईश्वर परमेशा ॥

जय श्री धर्म धर्म अनुरागी ।

केवल ज्ञान कला उर जागी ॥९॥

जय श्री शान्त अतिशान्त स्वरूपी ।

एक रूप बहु रूप अरूपी ॥

जय श्री कुँथ कंथ शिवरानी ।

तीन जगत पति पत जिन बानी ॥१०॥

जय अरह अरिदल सब कारी ।

तारन अनुरागी सागारी ॥

जय श्रीमल्ल करन सुख काजा ।

श्रीकर श्रीधर श्री जिन राजा ॥११॥

जय श्री मुनि सुव्रत जिन राई ।

अव्रत नाशक सुव्रत दाई ॥

जय नमिनाथ नाथ संसारी ।

लोकालोक विलोक आनंकारी ॥१२॥

जय श्रीनेम हरी कुल भूषण ।

जीवन मुक्ति विगत सब दूषण ॥

जय पारश सुन अही नवकारा ।
अमरपुरी धनपति पद धारार ॥१३॥
जय जय जय जय श्री महावीरा ।
वर्द्धमान सन्मत अतिवीरा ॥
जपो ह्रीं न्यायमत सुखकारा ।
गर्मित चौवीसों अवतारा ॥१४॥

७

(चाल) क़वाली (ताल कहरवा) है बहारे बाग़ दुनिया चंद रोज ॥

यक बयक उलटा ज़माना होगया ।
कैसा कलयुग का बहाना हो गया ॥१॥
पहिले होता था जवानीमें व्याह ।
ढंग यह क्योंकर रवाना हो गया ॥२॥
बचपनमें शादियां होने लगी ।
हाय क्या उलटा ज़माना हो गया ॥३॥
रहम बच्चोंपे कोई करता नहीं ।
जुल्मका दिल में ठिकाना हो गया ॥४॥
लाखों बच्चे रोता दिन मरने लगे ।
न्यायमत ग़मका फ़िसाना हो गया ॥५॥

८

(चाल) कवाली (ताल कहरवा) अदमसे जानिबे हस्ती तलाशे यार म आए ॥

नोट—यह भजन जनाब नवाब लेफटीनेंट गवर्नर

बहादुर पंजाबकी तशरीफ़ आवरी बमुकाम हिसार बनाया गया था और सन् १९१५ में सुनाया गया था॥

खुशी का आज क्यों सामान सारा होता जाता है।
यह क्यों रशके चमन खाना हमारा होता जाता है॥१॥
हमारे लाट साहेब आज यहां तशरीफ़ लाये हैं।
गोया इक़बाल का रोशन सितारा होता जाता है॥२॥
मुबारक आजका दिन है खुशी क्यों कर न होवें हम।
हमारे पे इनायत का इशारा होता जाता है॥३॥
फ़ते हो राज बृटिश की मिले दुनिया की सब न्यामत।
ग़ैब से अब तो नुसरत का इशारा होता जाता है॥४॥

९

(चाल) चौपाई १५ मात्रा

आदि पुरुष आदीश जिनेश, जग नायक जग वंद्य महेश।
आदि सुविधि सबको बतलाय, पूजूं ऋषभदेव सर नाय॥१
अष्ट करमके जीतनहार, जग उद्धार लिया अवतार।
मोह जाल जिनदीनों तोड़, पूजूं अजित नाथकरजोड़॥२॥
बरसे रतन पांच दश मास, गर्भ माहीं कीनों जिनवास।
सोलह स्वप्न लखे जिन मात, मैं पूजूं शंभू हर्षात॥३॥
उठ परभात पती पूछियो, राजा अर्द्ध सिंघासन दियो।
स्वपनोंका फल करत उचार, अभिनंदनपूजूं अवतार॥४॥

छप्पनदेवी इन्द्र पठाय, माता सेव करें अधिकाय।
दर्पण बिंब ऐसे जिन रहे, श्री सुमत पूजत सुखलहे ॥५॥
मुकुट झुका सुरपति तत्कार, घंटे सब बाजे इक बार।
इन्द्र लखो तब अवधि विचार, पद्मप्रभू लीनों अवतार ॥६॥
हुक्म दियो धनपति उस घड़ी ऐरावत गजमाया करी।
सब सुर देवी कर सिंगार, श्री सुपार्श्व आए दर्बार ॥७॥
चंद्र सूर्य सबही मिलआय, भवनपती आए सर नाय।
व्यंतर खगपति आनंद भरे, चंद्र प्रभू के दर्शन करे ॥८॥
जा परसूत सचीजिन लियो, माया मयी बालक रच दियो।
माया नींद रची जिन मात, वंदे पुष्पदंत हरषात ॥९॥
सौंपे हाथ पती के आय, लोचन सहँससो इंद्र बनाय।
रूपदेख तिरपत नहीं भयो, श्री शीतलचर्णनको नयो।१०॥
मेरुजाय सुर हुकम सुनाय, क्षीरोदधि कलशे भरलाय।
सहस अठोत्तर कलश सँवार, श्री श्रेयांसशीस पर ढार।११॥
इन्द्र सची सब सुर हर्षाय, लये गंधोदक शीस चढ़ाय।
नाना विधिकर जिन शृंगार. पूजे वासपूज्य पद सार॥१२॥
इन्द्राणि माता पे गई, देख जगत गुरू आनंद भई।
तिहुं जग तिलकर जो कियो, मानोविमलर पद लियो॥१३॥
इन्द्र रचो नाटक तब आय, श्री जिनके दश भव दर्शाय।
शक्ति अनंतर स्वरूप, धन्य अनंत नाथ जग भूप ॥१४॥

मति श्रुति अवधि ज्ञान भरपूर, महासुभग मूरति महासूर।
मल मूत्रादि रहित शरीर, धर्मनाथ पूजूं वरधीर ॥१५॥
जो वन में वैराग विचार, भावइ भवन भाई सार।
संबोधे लोकांतिक आय, शांतभये धर्मन सरनाय ॥१६॥
आपा परको कियो विचार, आतम रूप लखो जिनसार।
तन धन यौवन थिर नहीं जान, कुंथ नाथ पायो विज्ञान॥१७॥
तपकर कर्म जलाये सभी, केवल ज्ञान उपायो तभी।
समवशरण सुररचना करी, अर्हनाथ मुखवाणी खिरी ॥१८॥
सात तत्व उपदेश जो करो, स्याद्वाद कर संशय हरो।
मिथ्यामत खंडेइकवार, मल्लनाथ जिनमत विस्तार ॥१९॥
दो विध धर्मकहो जिनराज, हर्षलहो सुन सकल समाज।
गाय सिंह बैठे इक ठौर, मुनि सुव्रत वंदूं कर जोड़ ॥२०॥
तारण तरन जगतमें सही, कुमत हटाय सुमति मति दई।
जगवंद तुम दीनदयाल, नमूं नमी श्री जिन तिहुं काल॥२१॥
हरता करता आपही जीव, स्वयं सिद्ध यह लोक सदीव।
ऐसा बतलायो जिन राज, वंदूं नेम नाथ महाराज ॥२२॥
नाग नागनी जलत उभार, अंतसमय दीनों नवकार।
सुर पदवी धारी छिन माय, वंदूं पार्श्वनाथ चितलाय॥२३॥
कातक सुदीचौदश की रात, मावसको जानों परभात।
चित्रानक्षत्र लियो निर्वाण, वंदूं महावीर भगवान॥२४॥

दोहा—पंच कल्याणक पाठयह, न्यामत रचो संवार ।
संवत् विक्रम दोसहस, छियालीस देखो निकार ॥२५॥

१०

(चाल) कवाली (ताल कहरवा) कतल मत करना मुझे
तेगो तबर से देखना

जैनमत जब से घटा मूरख ज़माना हो गया ।
यानि सच्चा ज्ञान सब एक दम रवाना हो गया ॥१॥
गुफ्त फ़हमी झूठ ताइस्मी गई हद से गुज़र ।
सच अगर पूछो तो सब उलटा ज़माना हो गया ॥२॥
ज़ाते पाक ईश्वर को करता हरता दुनियाका कहें ।
हाय भारत आजकल विलकुल दिवाना हो गया ॥३॥
कर्मफल-दाता भी कोई और है कहने लगे ।
कैसी उल्टी बात का दिल में ठिकाना हो गया ॥४॥
कोई कोई जीवकी हस्ती से भी मुनकिर हुए ।
कैसा यह अज्ञान का दिल पे निशाना हो गया ॥५॥
जैन मत प्रचार हटने का नतीजा देख लो ।
रहम उल्फत छोड़ कर हिंसक ज़माना हो गया ॥६॥
झूठ चोरी और दगाबाज़ी कहां तक बढ़ गई ।
पाप करते आप कलयुग का बहाना हो गया ॥७॥

बुग़्ज़ कीना फूट घर घर में नज़र आने लगे।
वात्सल्य जाता रहा अपना विगाना हो गया ॥८॥
न्यायमत अब तो जैन मत की इशाअत कीजिये।
सोते सोते मोह निद्रा में ज़माना हो गया ॥६॥

## ११

(चाल) क़वाली (ताल कहरवा) अदम से जानिये हस्ती तलाशे यार में आप

नोट—यह गज़ल अज़ीज वीरचंद्र सुपुत्र लाला फतेचंद जैन रईस हिसार के लिये बनाई गई-जो उस ने देहली में अपनी शादी में माह मार्च सन् १९१६ में पढ़ी थी ॥

मुबारक आज का दिन है, मुबारक हो मुबारक हो।
सदाएं आरहीं हैं दिन, मुबारकहो मुबारक हो ॥ १ ॥
स्टेशन शहर देहली पर, खुशीसे जब बरात आई।
हो जानिब से निशात आई, मुबारकहो मुबारक हो ॥२॥
फ़लक पे रक्स जोहरा कर रही है, देख शादी को।
ज़ुबां से कह रही है दमबदम शादी मुबारक हो ॥३॥
लगी थी जो तमन्ना सब के दिल में एक मुद्दत से।
खुशीसे आज बर आई, मुबारक हो मुबारक हो ॥ ४ ॥

विदा होते हैं अब हम पर इनायत की नजर रखना ।
खुशी का ऐसा दिन सब को मुबारक हो मुबारक हो ॥५॥
श्रीजिनराज का धनवाद न्यामत क्यों न गावें हम ।
खुशी से होगई शादी, मुबारक हो मुबारक हो ॥ ६ ॥

१२

( चाल ) कवाली [ ताल कहरवा ] यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्या सूरत बनी गमकी ॥

नोट—भरत जी का श्री रामचन्द्र जी से मिलना और राज्य सौंपना ॥

अजुध्या में श्री रघुवर, तेरा आना मुबारक हो ।
भाई लछमन का सीताका संग लाना मुबारक हो ॥१॥
अजुध्या की सकल परजा, तेरा धनवाद गाती है ।
आपके सार चरणों का दरश पाना मुबारक हो ॥ २ ॥
पिता का हुक्म माता का, बचन पूरा किया तुमने ।
जीत लंकेश रावनको, तेरा आना मुबारक हो ॥ ३ ॥
अजुध्या का राज लीजे, और शाही ताज लीजे ।
मुबकदोशी मुझे दीजे, तेरा आना मुबारक हो ॥ ४ ॥
सकल परजा यही अब कह रही है यक जुबां न्यामत ।
मुबारक हो मुबारक हो, तेरा आना मुबारक हो ॥ ५ ॥

१३

[ चाल- ] कव्वाली [ ताल कहरवा ] कत्ल मत करना मुझे
तेगोतबर से देखना

नोट—जिस समय लक्ष्मणजी के शक्ति लगी उस समय हनुमान आदि सब सरदारों ने रामचन्द्र जी से कहा कि महाराज शोक को निवारिये और युद्ध का इन्तजाम कीजिये इस समय रोना उचित नहीं है यह बात सुन कर श्रीरामचन्द्रजी ने यह जवाब दिया:—

मैं नहीं रोता अयोध्या का राज जाता रहा ।
मैं नहीं रोता अगर लङ्का राज जाता रहा ॥ १ ॥
बन में आने का भी है कुछ रंजो गम मुझको नहीं ।
गम नहीं है देश का सामान गर जाता रहा ॥ २ ॥
गम नहीं मुझको अगर सीता सती जाती रही ।
गर मेरा प्यारा सितारा सा लखन जाता रहा ॥३॥
रंज गर है तो मुझे हां रंज है इस बातका ।
कौल झूठा होगया मेरा परण जाता रहा ॥ ४ ॥
किस तरह दूंगा विभीषण को भला लंका का राज।
जिस भरोसे पर कहाथा आज वह जाता रहा ॥५॥

१४

[ चाल- ] नाटक [ ताल कहरवा ]

नोट—राम का लक्ष्मन को सीता की तलाश करने का हुक्म देना।

देखो लक्ष्मन इधर उधर फर लेकर तीर कमान
जंगल देखो-दरिया देखो-देखो सूम मशान।
गिर कंदर के अन्दर बाहर-जहां कहीं मिले निशान।
मेरा हाल-है बेहाल-जी निढाल-
इस काल-कर ख्याल॥ देखो लक्ष्मन०॥
जल्दी गमन करो-देरी नहीं करो।
मेरे मन का गम हरो-कर में धनुष धरो-
करके ध्यान॥ देखो लक्ष्मन०॥

१५

[ चाल ] नाटक [ताल कहरवा] मेरी मानों जी मानों क्या डर है

नोट—लक्ष्मण का खर दूषन से लड़ने के लिये रामचंद्र जी से आज्ञा मांगना।

मुझे जानेदो भाई क्या डर है, तुम्हें काहेका दता फिकर है
ले धनुषबाण जाता हूं, इन सबको गिरा आता हूं।
अभीजा, दल हिला, काम बनाके जल्दी आ।
दिल में न कोई फिकर है, तुम्हें काहे का पता फिकर है।

१६

[चाल] नाटक [ ताल कहरवा ] मेरी मानो जी मानो क्या डर है

नोट—हनूमानजी का मुद्रिका लेकर सीताजीके पास जाना

धारो धारो जी धीरज क्या डर है,
तुम्हें काहे का दिल में फिकर है।
सीता के पास जाता हूं, मुद्री को दिये आता हूं।
वहां पे जा बल दिखा, काम बना के जल्दी आ।
लादूंगा जैसी खबर है,
मेरे दिल में न कोई खतरहै॥धारो० १॥

१७

[ चाल ] नाटक [ ताल—कहरवा ] अलबेला छैला ऐसा लावेंगे नई शान का॥

नोट—सीताजी का रावण को जबाब देना

सुन पापी रावण, हाथ ना लाना मैं सती हूं।
कुछ ज्ञानकर, विज्ञान कर, टुक ध्यानकर॥ सुन०॥
क्यों ना बीच स्वयम्बर, आया, बतला तो सही॥
क्यों ना सागर धनुष चढ़ाया, बतलातो सही।
क्यों ना भुजबल वहां दिखलाया, बतला तो सही।
क्या पता तुझे नहीं पाया, बतलातो सही॥
यही चतुराई—यही ठकुराई ॥

१७

अरे कलह बढाने वाले, परे हट हट हट
अरे शील डिगाने वाले परे हट हट हट
अरे सती चुराने वाले, परे हट हट हट
भाई को हटाने वाले, परे हट हट हट
कहां सुत भाई—कुमत उर छाई
न्यामत कुमति हटावो ॥
कुछ ज्ञान कर, विज्ञान कर, टुक ध्यान कर ॥ १ ॥

१८

(चाल) नाटक भैरवी (ताल कहरवा)

शरण धरम की लेले चेतन भटक भटक गया हार ।
कोई कोई विन धरम नहीं हितकार ।
उत्तर दक्खन पूरव पच्छम ढूंडा सभी संसार ।
यही—यही—है दुःखों का मोचन हार ॥ शरण० ॥

(चौपाई)

लाख उपाय करो नर नारी ।
विधना लेख टरे नहीं टारी ॥
स्वारथ के सुत पितु महतारी ।
यह हमने निश्चय कर धारी ॥

चपला नाम सिंघ दुःखदाई ।

जल बन शैल अगन के माहीं ॥

काम न आवें बंधु भाई ।

होता है इक धर्म सहाई ॥

धर्म है सार, सुखकरतार, दुख हरतार, मददगार ।

न्यामत तुझे आधार, करता–

करता–है यह पतितनका उद्धार ॥ शरण० ॥ १ ॥

१९

(चाल) कव्वाली (ताल–कहरवा) कतल मत करना मुझे तेगो नजर देखना

जुल्म करना छोड़दो साहेब खुदा के वास्ते ।

जुल्म अच्छा है नहीं करना किसी के वास्ते ॥ १ ॥

रहम कर गौवों पै बस मत ज़ुल्म पर बांधो कमर ।

क्यों सताते हो किसी को चार दिन के वास्ते ॥२॥

कुछ दया दिल में धरो गौ मात की रक्षा करो ।

दूध घी देती है यह पीरो जवां के वास्ते ॥३॥

सच कहो खुद गर्ज और ज़ालिम है वह या कि नहीं ।

बे ज़ुबां को मारते अपने मज़े के वास्ते ॥४॥

काट गल औरों का मांगें खैर अपनी जान की ।

सोच कहां होगा भला इसका खुदा के वास्ते ॥५॥
बेचिये गौ बाब को हरगिज़ नहीं हरगिज़ नहीं
बल्कि तन मन धन सभी दीजे गऊ के वास्ते ॥६॥
कर भला होगा भला कलयुग नहीं करजुग है यह ।
न्यायवत करता है वह सबके भले के वास्ते ॥७॥

२०

(चाल-) कव्वाली (ताल-कहरवा) कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

नोट—जनाब नवाब लाफ़टीनेंट गवर्नर बहादुर लार्ड डेन सूबा पंजाब मए लेडी डेन यहां हिसार में तशरीफ़ लाये थे और लेडी डेन साहिबा ने कन्या-पाठशाला का निरीक्षण करके इनाम तक़सीम किया था उस समय कन्याओं ने यह भजन पढ़ कर सुनाया था ॥

बड़ी धन आज लेडी डेन जो यहां पै पधारी हैं ।
हमारे लाट साहेब की बड़ी प्यारी पियारी हैं ॥१॥
बड़ी किरपा करी जो आपने दर्शन दिखाए हैं ।
आप सरकार हैं सबके महारानी हमारी हैं ॥२॥
बढ़ाई आपने शोभा हमारी पाठशाला की ।
हमारे भाग अच्छे हैं बड़ी क़िस्मत हमारी हैं ॥३॥

हमारी कौन सुनता था, कौन हमको पढ़ाता था ।
हज़ारों आजतक मूरख, फिरें बहनें हमारी हैं ॥४॥
आपने की कृपा दृष्टी, जो कन्याओं की हालत पर ।
हज़ारों पाठशाला आज, हर नगरी में जारी हैं ॥५॥
खुशी क्योंकर न होवें हम, न क्यों धन्यवाद गावें हम ।
हमारे सामने बैठी, महारानी हमारी हैं ॥६॥
मुबारक हाथ से अपने, हमें ईनाम देवेंगी ।
इसी कारण हमारी, पाठशाला में पधारी हैं ॥७॥
हमें आशा है एक दिन को, मिडिल भी हो ही जावेगा ।
बड़ी दानी दया धारी, महारानी हमारी हैं ॥८॥
कहे न्यामत सुनों बहनों, प्रभू से आज यह मांगो ।
कि लेडी डेन की जय हो, जो हितकारी हमारी हैं ॥९॥

## २१

(चाल-) क़वाली (ताल-क़हरवा) कहाँ लेजाऊं दिल दोनों, जहां में इसकी मुश्किल है ॥

सुनों अब जैन सरदारो, ज़रा दिल में दया धारो ।
डूबती क़ौम की कश्ती, बचाना ही मुनासिब है ॥१॥
हिताहित जैन मंडल ने, है बस समझा दिया हमको ।
अमल इस पर तुम्हें करना, कराना ही मुनासिब है ॥२॥

२१

बने हैं जब से यह फिरके, दशा बिगड़ी है जिन मत की।
तफ़रका अब तुम्हें दिल से, हटाना ही मुनासिब है ॥३॥
दिगम्बर और सितम्बर मिल, फैसला घर में कर लीजे।
न्यायमत अब तो आपस में, निभाना ही मुनासिब है ॥४॥

## २२

(चाल-) क़वाली (ताल-कहरवा) है बहारे बाग़ दुनिया चंदरोज़ ॥

व्यर्थ व्यय करना कराना छोड़दो ।
छोड़दो बहरे प्रभू तुम छोड़दो ॥१॥
नाच भारत को नचाया खूब सा ।
अब तो रंडियों का नचाना छोड़दो ॥२॥
कर दया दुख्तर फिरोशी छोड़दो ।
बूढ़ों के सेहरा लगाना छोड़दो ॥३॥
लुट चुकी सारी बहार अब आप की।
बाग़ बाडी का लुटाना छोड़दो ॥४॥
बस जो बस रहने दो भूर और फेक को ।
इस तरह धन का लुटाना छोड़ दो ॥५॥
न्यायमत उपकार औरों का करो ।
खुद गरज़ बनना बनाना छोड़ दो ॥६॥

२३

(चाल-) खड़ताली (ताल-कहरवा) मज़ा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंगर वाले ॥

सुनियो भारत के सरदार, सत मारग दिखलाने वाले।
सत मारग दिखलाने वाले, बद रस्मों के हटाने वाले ॥टेक॥
देखो इस भारत के बीच, कैसी होगई किरिया नींच।
सबने लिया आंख को मीच, पंडित सेठ कहाने वाले ॥१॥
खुद तो पढ़ बन गए गुणवान बाबू मुन्शी और प्रधान।
औरत यूंही रही नादान ऐ विद्वान कहाने वाले ॥२॥
इनका अर्द्धंगी है नाम, करती मंत्री पद का काम।
रक्खो क्यों मूरख ना काम, सुनियो सभा कराने वले ॥३॥
अब तो दिल में दया विचार, औरत की भी सुनो पुकार।
इनको दीजे विद्या सार, दया का भाव दिखाने वाले ॥४॥
तुमने एम० ए० डिगरी पाई, इनकी कुछ तो करो सहाई।
वरना होगी यू ही हंसाई, न्यामत कहते कहने वाले ॥५॥

२४

(राग) मिश्रित (ताल-कहरवा) (चाल) अटारियों पै बैठा कबूतर आधी रात ॥

(दो लडकियों का आपस में बात चीत करना)

सुन सुनरी बहना विद्या परम सुखकार ।
हां हांरी विद्या सांची हमारी हितकार ॥१॥
सुन सुनरी बहना विद्या है नारी का सिंगार ।
हां हांरी विद्या बिना पशु सम नार ॥२॥
सुन सुनरी बहना विद्या है जग में धन सार ।
हां हांरी या को लेवें ना चोर चकार ॥३॥
सुन सुनरी विद्या सबका करे उपकार ।
हां हांरी या से राजा भी करे सत्कार ॥४॥
है न्यानत कैसी दानी हमारी सरकार ।
हां हांरी कीना घर घर में विद्या परचार ॥५॥

२४

(राग) क़वाली (ताल) कहरवा (चाल) क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना ॥

(राम का रण भूमि में रावण को समझाना)

सुन अरे रावण कहूं मैं बात निज मन की तुझे ।
फेरदे सीता सती ख़्वाहिश नहीं धन की मुझे ॥१॥
गर करे कोई बुराई मै बुरा मानू नहीं ।
और का औगुण भी लगती है बात गुण की मुझे ॥२॥

है कलह दुनिया में दुखदाई दुजानिब देखलो ।
याद है यह बात प्यारी जैन शासन की मुझे ॥३॥
बे वजह लाखों मनुष्य रण में मरेंगे देखले ।
क्यों दिखाता है अरे ज़ालिम बिना रण की मुझे॥४॥
बिन सिया सारा जगत सुनसान लगता है मुझे ।
है खबर कुछ भी नहीं घर बार और तन की मुझे ॥५॥
मेरे जीते जी सिया दुख पाय तेरी क़ैद में ।
जिंदगी अच्छी नहीं लगती है एक छिन की मुझे ॥६॥
हेच हैं सीता बिना दुनियां की सारी नैमतें ।
एक पल ठंडी नहीं लगती हवा वन की मुझे ॥७॥
तीर गर चिल्ले चढ़ाया तो क़यामत आयगी ।
फेर मानूं गा नहीं सौगन्द लछमन की मुझे ॥८॥
न्यायमत रघुवीर ने यह भी कहा गर दे सिया ।
बख्श दूगा सब खता कुछ जिद नहीं रण की मुझे ॥९॥

२६

(राग) क़वाली (ताल) कहरवा (चाल) कहां लेजाऊ दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

नहीं क़ाबू में आता है दिले नादान क्या कीजे ।
इसे क़ाबू में लाने का कहो सामान क्या कीजे ॥१॥

कभी विषयों में जाता है कभी भोगों में आता है ।
कहीं टिकता नहीं मूरख निपट नादान क्या कीजे ॥२॥
जु़वां पर ख़्वाहिशें लाखों हजारों आरज़ू दिल में ।
मगर होते नहीं पूरे कभी अरमान क्या कीजे ॥३॥
न्यायमत दिल को समझाओ करे सन्तोष दुनिया में ।
बिना इसके नहीं चारा अरे अज्ञान क्या कीजे ॥४॥

२७

(राग) क़वाली (ताल) कहरवा (चाल) क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो नवर से देखना ॥

वेशुवा बदकार की गलियों में जाना छोड़दे ।
छोड़दे आंखें मिलाना दिल लगाना छोड़दे ॥१॥
भोली भाली सूरतों को देख ललचाओ न दिल ।
सबकी सब चित चोर चंचल मूंह लगाना छोड़दे ॥२॥
तर्क कर इनकी मुहब्बत यह चलन अच्छा नहीं ।
इनके जाना छोड़दे घर पे बुलाना छोड़दे ॥३॥
ऐसे काफ़िर को कभी दिलमें जगह दीजे नहीं ।
हों यह जिस महफ़िल में उस महफ़िल में जाना छोड़दे ॥४॥
ज़िक्र तक करना नहीं अच्छा है इनका न्यायमत ।
है यही बहतर कि यह क़िस्सा फ़िसाना छो दे ॥५॥

२८

(राग) कवाली (ताल) कहरवा (चाल) कत्ल मत करना मुझे तेग़ो नवर से देखना ॥

मय कशी में देखलो यारो मज़ा कुछ भी नहीं ।
खुद व खुद बेखुद बनें लेकिन मज़ा कुछ भी नहीं ॥१॥
सारा घर का मालो ज़र बोतल के रस्ते खोदिया ।
मुफ्त में इज्ज़त गई पाया मज़ा कुछ भी नहीं ॥२॥
जब नशा उतरा तो हालत और अबतर होगई ।
खाली बोतल देखकर बोले मजा कुछ भी नहीं ॥३॥
रात दिन नारी बेचारी जान को रोया करे ।
ऐसी मय ख़्वारी पे लानत है मज़ा कुछ भी नहीं ॥४॥
न्यायमत इस मय की उल्फत का नतीज़ा देख लो ।
बस ख़राबी के सिवा इसमें मज़ा कुछ भी नहीं । ५॥

२९

( राग ) रसिया ( ताल ) कहरवा ( चाल ) काँटा लागोरे देवरिया मोसे संग चलो ना जाय ॥

देखो देखोरे चेतनवा तेरे संग चले ना कोय ।
संग चले ना कोय ॥ नाती साथी परियन लोय ॥टेक॥

मात तात स्वारथ के साथी ॥ हैं मतलब के सगे संगाती
तेरा हितू न कोय ॥ तेरे० ॥ १ ॥
झूंठी नैना उल्फत बांधी ॥ किसके सौना किसके चांदी
क्यों मूरख पत खोय ॥ तेरे० ॥२॥
नदी नाव संयोग मिलाया ॥ सो सब जन मिल कुटंब कहाया
सदा रहे ना कोय ॥ तेरे० ॥३॥
इक दिन पवन चलेगी आंधी ॥ किसकी बीबी किसकी बांदी
उलट पुलट सब होय ॥ तेरे० ॥४॥
खोटा बणज किया व्योपारी ॥ टांडा जोड़ धरा सर भारी
किस विध हलका होय ॥ तेरे० ॥५॥
आश्रव बंध चुका इकवारा ॥ हलका हो सर बोझा भारा
तान चदरिया सोय ॥ तेरे० ॥६॥
न्यामत मंज़िल दूर पड़ी है ॥ विकट बड़ी है कठिन कड़ी हैं
कांटे शूल न बोय ॥ तेरे० ॥७॥

### ३०

(राग) देश (ताल) तीन (चाल) नित्य फेरो माला हरकी रे

कुछ कीजे नेकी जगमें रे ॥ कुछ कीजे नेकी जगमें रे (टेक)
अन्न जल औषध ज्ञान अभय पद, दीजे दान विचार रे।
बैरी मित्र भेद को तज कर, कर सबका उपकार रे ॥१॥

ख़ाली हाथ गये लाखों ही, राजा साहूकार रे ।
जो धर्मार्थ लगावे सम्पति वही बड़ा सरदार रे ॥२॥
आठ अंग समकित के जामें, चार स्वपर हितकार रे ।
स्थिति करण उपगूहन वात्सल्य, निर्विचिकित्सा साररे ॥३॥
जो दुखियों की करुणा पाले, टाले विपति निहार रे ।
सोही सुख पावे तिर जावे, भवसागर से पार रे ॥४॥
कालेज जैन मदरसे खोलो, अरु पुस्तक भण्डार रे ।
न्यामत ज्ञान दान सम जगमें, दूजा नहीं शुभकार रे ॥५॥

## नोट

जि़ले हिसार में लांधड़ी एक छोटासा क़स्बा है जो विश्नोई लोगों की वस्ती है वहां पर एक विश्नोई कमेटी है जिसके प्रेजि़डेन्ट टांडीजी चौधरी दल्लूराम हैं आप अर्वी व फ़ार्सी व उर्दू जुबान के एक आला दर्जे के शाइर ( कवि ) हैं इस समय में आपके मुक़ाबले का कोई कोई कवि मिलता है आपका " कोसरी " तखल्लुस हैं आप मेरे बड़े मित्र हैं और जैन धर्म के विषय में प्रायः मेरे से वार्तालाप करते रहते हैं आपने आत्मा के विषय में २१ भजन बनाये हैं जो सर्व साधारण के हितार्थ नीचे लिखे जाते हैं देखो नम्बर ३१ इकत्तीस से ५१ तक ॥ इन भजनों में आत्मा का स्वरूप निश्चय नय से दिखलाया है

## ३१

(राग) कवाली (ताल) कहरवा (चाल) है वहारे बाग़ दुनिया चन्द रोज़

इब्तदा और इन्तहा मुझको नहीं।
वह बक़ाई हूं फ़ना मुझको नहीं ॥१॥

दीन के झगड़ों से हूं फ़ारिग़नशीं।
खौफ़ दुनिया का ज़रा मुझको नहीं ॥२॥

हूं सरापा एक हुस्ने ला ज़वाल।
हसरते नाज़ो अदा मुझको नहीं ॥३॥

खुद बखुद हूं और खुद मुख्तार हूं।
यानि तकलीफ़ खुदा मुझको नहीं ॥४॥

असलियत में हाल यकसां है मेरा।
सदमए रंजो बला मुझको नहीं ॥५॥

हूं मुबर्रा ज़ीनते पोशाक से।
लज्जते आबो गिज़ा मुझको नहीं ॥६॥

यह तो सब कुछ है मगर अफ़सोस है।
कोसरी अपना पता मुझको नहीं ॥७॥

३२

[ राग ] क़व्वाली [ ताल ] कहरवा [ चाल ] है बहारे बाग़ दुनियां चन्द रोज़ ।

फ़ायदा क्या सोहबते अग़ियार से ।
दोस्ती वाजिब है अपने यार से ॥१॥

आशिक़े गुल हूं मुझे गुल चाहिये ।
काम बुलबुल को नहीं कुछ ख़ार से ॥२॥

जनसरे रूही हूं मैं ख़ाकी नहीं ।
कट नहीं सकता कभी तलवार से ॥३॥

है बराबर शहरो वैरां सब मुझे ।
शेर से दहशत न ख़तरा मार से ॥४॥

सूद है मुझको न कुछ नुकसान है ।
दीद से गुफ्तार से रफ़्तार से ॥५॥

मुझको लुत्फ़े वस्ल जिस्मानी नहीं ।
मस्त हूं मैं अपने ही दीदार से ॥६॥

कोसरी जिस्म और रूहानी ग़ज़ल ।
आत्मा खुश है तेरे अशआर से ॥७॥

३३

(राग) क़व्वाली (ताल) कहरवा (चाल) है बहारे बाग़ दुनिया चंद रोज़

याद हैं सब बस्के कहानी मुझे ।
साफ समझे अक्ल इन्सानी मुझे ॥ १ ॥
हूं बरी हर ऐब से हर हाल में ।
हो नहीं सकती परोशानी मुझे ॥२॥
वह सफाई हूं मिटा सकते नहीं ।
आग मिट्टी और हवा पानी मुझे ॥३॥
आत्मा हूं देख कैसी चीज़ हूं ।
प्राण से प्यारा समझ ज्ञानी मुझे ॥४॥
हो नहीं सकता मुझे कोई मरज ।
क्या करेगी लिख्खे युनानी मुझे ॥५॥
हर तरफ है राज मेरा दहर में ।
हर तरह हासिल है आसानी मुझे ॥६॥
आतमा हूं और रूहे पाक हूं ।
फिर न कहना कोसरी, फ़ानी मुझे ॥७॥

३४

(राग) कव्वाली (ताल) कहरवा (चाल) है बहारे बाग दुनिया चंद रोज

नूर हूं मैं नूर हूं मैं नूर हूं ।
नेस्ती से दूर हूं मैं दूर हूं ॥१॥

किसकी मंजूरीकी मुझको अहतियाज ।
आपही अपने को खुद मंजूर हूं ॥२॥
मैं न शैदाए परी हूं ग़ाफ़िलो ।
मैं न मुशताक़े जमाले हूर हूं ॥३॥
मैं न दुनिया की हूं आफ़त में असीर ।
मैं न दौलत के लिये रंजूर हूं ॥४॥
बेनियाजे महफ़िले साक़ी हूं मैं ।
आप मैं अपने नशे में चूर हूं ॥५॥
रूह कहते हैं मुझे अहले अरब ।
आत्मा मैं हिंद में मशहूर हूं ॥६॥
मैं न हूं महकूम सुलतानो खदेव ।
मैं न मोहताजे शहे फग़फ़ूर हूं *॥७॥

३५

(राग) क़वाली (ताल) कहरवा (चाल) है बहारे बाग दुनिया चद रोज़ ॥

अय दिले हुशियार दीवाना न हो ।
ग़ैर की उल्फ़त में बेगाना न हो ॥१॥

---

*लक़बशाहे चीन

आप अपने आपका आशिक़ तू बन।
औंर से जिनहार याराना न हो ॥२॥
घर खुदा का तूने समझा है जिसे।
अय खराबाती वह मय खाना न हो ॥३॥
जान रक्खा है जिसे जामे हयात।
वह कहीं बेकार पैमाना न हो ॥ ४ ॥
जो नजर आता है तुझ को गोस्तां।
अय दिले गाफ़िल वह वीराना न हो ॥ ५॥
कोसरी में मैं किया कर रात दिन।
मासिवा का याद अफ़साना न हो ॥६॥

३६

(राग) कव्वाली (ताल) रूपक (गज़ल) गये दोनों जहान नजर से गुजर तेरी शान का कोई बशर न: मिला॥

न गमे खिज़ां न फ़सादे गुल अजब आत्माकी बहार है।
यही बाग़ है यही अब्र है यही जाम है यही यार है॥१॥
मुझे लुत्फ़ है मेरी यादमें यही है खुशी दिले शादमें।
मेरे ज़हनमें नहीं कुछ जहां यह ज़माना सारा गुबार है॥२॥
न पसंद कुर्सी न मेज़ है मेरी चाल सुस्त न तेज़ है।
मुझे हर जगहसे गुरेज़ है मेरा हर मक़ाम गुज़ार है॥३॥

न मैं अर्ज हूं न मैं तूल हूं न मैं खार हूं न मैं फूल हूं ।
न मैं शाख हूं न अम्सूल हूं मुझे आप मुझ से क़रार है ॥४॥
मैं हूं कोसरी मैं हूं कोसरी मैं हूं कोसरी मैं हूं कोसरी ।
मेरा लाधड़ीमें क़याम है जो क़रीब शहर हिसार है ॥५॥

## ३७

(राग) क़वाली (ताल) कहरवा चाल इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ॥

गुलिस्तां और बियावां में मैं ही तो हूं मैं ही तो हूं ।
दिलं रंजूर शादां में मैं ही तो हूं में ही तो हूं ॥१॥
कभी उलझा दिया खुदको कभी सुलझा दिया खुदको ।
किसी की जुल्फ़ पेचां में मैं ही तो हूं मैं ही तो हूं ॥२॥
कभी ज़ाहिद कभी आसी कभी पंडित कभी क़ाज़ी ।
ग़रज़ हिन्दू मुसलमां में मैं ही तो हूं मैं ही तो हूं ॥३॥
कभी उस्ताद आलिम हूं कभी हूं तिफ़ले अवजद ख्वां ।
स्कूलों में दविस्तां में मैं ही तो हूं मैं ही तो हूं ॥४॥
कोसरी सूरतें क्या क्या वदलता हूं मैं आलम में ।
मलक में और इन्सां में मैं ही तो हूं मैं ही तो हूं ॥५॥

३८

(राग) कवाली (ताल) कहरवा (चाल) न० ३७ की

मकां मेरे न हरगिज़ हैं न मसकन और वतन मेरे।
जमीं मेरी न ज़र मेरे पिसर मेरे न ज़न मेरे ॥१॥
अकेला हूं अकेला हूं अकेला हूं अकेला हूं।
पिदर मेरे न मां मेरे न भाई और बहन मेरे ॥२॥
न खाता हूं न पीता हूं जनमता हूं न मरता हूं।
लहू मेरे न रग मेरे न मन मेरे न तन मेरे ॥३॥
न नाक अपने न आंख अपने न कान अपने न सर अपने।
न हाथ अपने न टांग अपने न छाती और बदन मेरे॥४॥
बढ़ा के आसमां कांहें में वह सूरज ज़माने में।
निकलता हूं न छुपता हूं नहीं लगता गहन मेरे ॥५॥
किसी से मैं न कोई मुझ से, मै हूं कोसरी यक्ता।
पिदर मेरे न मां मेरे पिसर मेरे न ज़न मेरे ॥६॥

३९

(राग) कव्वाली (ताल) कहरवा (चाल) न० ३७ की

मज़े लेती है क्या क्या आत्मा परमात्मा होकर।
कि हासिलकी बक़ा मैंने खुदीमें खुद फ़ना होकर॥१॥
मैं जिसको ढूंढता फिरता था अपने आप में पाया।

अवस मैं भूलकर यूंही फिरा दर२ गदा होकर॥२॥
कभी रिन्दों में जा बैठा शरावे अर्गवां पीकर।
कभी परहेज़गारों में मिला में पारसा हो कर ॥३॥
सरासर मिलगया इकरोज मिट्टीमें शवाव उनका।
रहा जो पास गैरों के हमारा आशना होकर ॥४॥
था सब जलवा आत्माका राम सीता हरी रुक्मन।
इसीने सबको दीवाना बनाया दिलरुवा होकर॥५॥
अवस तुम कोलरो मरते हो इस मिट्टीके पुतले पे।
मिला दूंगा कभी मिट्टीमे मैं इसको जुदा होकर ॥६॥

४०

(राग) कवाली (ताल) कहरवा (चाल) इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता।

फ़ना कैसी बक़ा कैसी नई पोशाक बदली है।
फ़कत बदला है जिस्म अपना न रूहे पाकबदली है॥१॥
वह सबज़ा हूं उगा सौ बार जल २ कर इसी जासे।
न अपनी रूह बदली है मगर यह ख़ाक बदलीहै॥२॥
तमाशे रूह के देखो कि क्या २ रंग बदले हैं।
कहीं बिजली बनी थमकर कहीं चालाक बदली है॥३॥

बदन को मैं, तू समझा है खुदी को भूल बैठा है।
यह क्या हालत भला तूने दिले बेबाक बदली है॥४॥
न कहना कोसरी मुझको कि है है मर गया वह तो।
अजल कैसी कज़ा कैसी नई पोशाक बदली है॥५॥

## ४१

(राग) कवाली [ताल] कहरवा [चाल] इलाजे दर्दे दिल तुम
से मसीहा हो नहीं सकता॥

फ़ना को तू बक़ा समझा बक़ा को तू फ़ना समझा।
अगर समझा तो क्या समझा न असली मुद्दआ समझा॥१॥
पड़े पत्थर तेरी इस ना समझ पर अय दिले नादां।
बदन को आत्मा समझा न,तू खुदको ज़रा समझा॥२॥
अरे हिन्दू बता मुझ को किसे तू राम कहता है।
मियां मुसलिम ज़रा कहना कि तू किसको खुदा समझा॥३॥
यही है आत्मा जिसके करशमे जा बजा देखे।
यही रूहे मुक़द्दस है कि जिस को किब्रिया समझा॥४
यही नूरे मनव्वर है कि जिसका सब यह पर तो है॥
यही है आत्मा जिस को बशर परमात्मा समझा॥५॥
न तन होगा न धन होगा रहेगी आत्मा कायम।
इसी का दौर दौरा है यही मैं माजरा समझा॥६॥

यह सब अवतार पैग़म्बर ज़हूरे आत्मा के हैं।
अगर यूं कौसरी समझा तो बेशक तू बजा समझा॥७॥

४९

[राग] कव्वाली [ताल] रूपक [चाल] कत्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना॥

आत्मा में आत्मा के मासिवा कुछ भी नहीं।
है नकाईको बका दारे फ़ना कुछ भी नहीं॥१॥
इस तरह हूं जिस तरह पत्थरमें पिनहां है शरर।
ज्ञानमय हूं मुझमें गिल आबो हवा कुछभी नहीं॥२॥
रूह यह कहती हुई निकली बदनको तोड़कर।
है मेरी शक्ति अतुल लेकिन सदा कुछभी नहीं॥३॥
किसको कांशी और मक्का ढूंडता फिरता है तू।
है यही रूहे मुक़द्दस और खुदा कुछ भी नहीं॥४॥
कुद्रती गुलजार है और बहरे बे पायां है यह।
आत्माकी इब्तदा और इन्तहा कुछ भी नहीं॥५॥
फैजे रूहानी है इनका आजी कुछ नाम है।
वरना चश्मों गोश क्या यह दस्तोपा कुछभी नहीं॥६॥
कौसरी तू याद रख मेरा यह रूहानी सखुन।
लज्जाते दुनियाए फ़ानी में मजा कुछ भी नहीं॥७॥

४३

(राग) कवाली (ताल) ठुमरी (चाल) मैं वही हूँ प्यारी शकुन्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

मैं कभी तो शाहे जहान था तुम्हें याद हो कि न याद हो।
कभी दर बदर फिरा ज्यूं गदा तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥१॥

कभी आसमां पे मकीं हुआ कभी घर में गोशय गर्जा हुआ।
मेरा मुख्तलिफ गूंपी है पता तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥२॥

कभी आगमें हुआ शोलेजा कभी खाक में हुआ खुदनुमा।
कभी आब था कभी था हवा तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥३॥

जो है कांसरी मुझे अब बका यही पेश्तर भी कमाल था।
मुझे याद है मेरा माजरा तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥४॥

४४

(राग) कवाली (ताल) ठुमरी (चाल) मैं वही हूं प्यारी शकुन्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

मुझे लोग समझें न जिस कदर मेरा उसमे बढ़के कमाल है
मैं हूं वह कमाले वह बका नहीं जिसको खौफे जवाल है॥१॥

कहूं किससे अपना मैं माजरा न जरा घटा न ज़रा बढ़ा।
मैं वही रहा जोकि पहिले था मेरा नाम नूरो जलाल
है ।२।

न बका से मुझ मैं हुनर हुआ न फ़ना से मेरा ज़रर हुआ।
न मलक हुआ न बशर हुआ मेरा और ही सा
जमाल है ॥३॥

कहीं जीव हूं कहीं ब्रह्म हूं कहीं नूर हूं कहीं जोत हूं।
कहीं रूह हूं कहीं आत्मा यही हाल है यही क़ाल है ॥४।

मैं हूं देखता इल्म ग़ैब से मेरी जात पाक है ऐब से।
मुझे गहम है न गुमान है न क़यास है न ख़्याल है। ५॥

मैं लतीफ़ हूं मैं लतीफ़ हू मैं लतीफ़ हू मैं लतीफ़ हूं।
न कसीफ़ हूं न कसीफ़ हूं मेरी हद न गर्दों शुमाल है॥६॥

मुझे कौसरी नहीं कुछ फ़ना मैं बक़ा बक़ा मैं बक़ा बक़ा।
नहीं गै़र जिसको समझ सका मेरा इस तरह का
सवाल है ॥७॥

## ४५

[राग] संकीर्ण भैरवीं [ताल] कहरवा [चाल] घर से
यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको।

हुस्न लैला न कभी इसके बराबर होगा।
कोई जलवा न कभी रूह के हमसर होगा ॥१॥

क़िस्सए रूह व बदन में अभी जल्दी क्या है।
आप खुल जायगा जो जिसमें कि जौहर होगा ॥२॥
हाथ जिस दिन तुझे आएगी बक़ा की शाही।
हेच नज़रों में तेरी मुल्के सिकन्दर होगा ॥ ३ ॥
छोड़ देगी इसे जब रूहे मुक़द्दस ग़ाफ़िल।
यह बदन मट्टी में मट्टी तेरा मिल कर होगा ॥४॥
आखिर इस हिर्सोहवा का है खातमा कि नहीं।
मुज़्तरिब और कहां तक दिले मुज़्तिर होगा ॥५॥
काम आएगा न यह जिस्म तुरक्कब पे रूह।
आब मोती में न होगी तो वह पत्थर होगा ॥ ६ ॥
होंगे दुनियां में हज़ारों ही सखुन वर लेकिन।
क़ौसरी सा न ज़माने में सखुन वर होगा ॥७॥

## ४६

[ राग ] क़व्वाली [ ताल ] कहरवा [ चाल ] है बहारे बाग़ दुनियां चन्द रोज़

रूह यों निकलेगी जिस्मे ज़ार से।
जिस तरह नग़मा हो ज़ाहिर तार से ॥ १ ॥
बे खुदी मुझको खुदी में हो गई।
क्या रहा मतलब मुझे अग़ियार से ॥ २ ॥

मासिवा से कुछ इलाक़ा ही नहीं ।

मैं गले मिलता हूं अपने यार से ॥ ३ ॥

फूल क्या है ख़ार क्या है वे ख़बर ।

पूछ जाकर बुलबुले गुलज़ार से ॥ ४ ॥

घूमता हूं हाथ अपने वजद में ।

वे मज़ा हूं बोसए रुख़सार से ॥ ५ ॥

हूं मैं अपना आप आशिक ग़ाफ़िलो ।

फ़ायदा क्या ग़ैर के दीदार से ॥ ६ ॥

आत्मा हूं और रूहे पाक हूं ।

कौसरी रखना तू मुझको प्यार से ॥ ७ ॥

४७

( राग ) क़वाली ( ताल ) कहरवा ।( चाल ) है बहारे बाग़ दुनिया चन्द रोज़ ।

रूह को होती नहीं जहमत कोई ।

आत्मा जैसी नहीं नैमत कोई ॥ १ ॥

है बदन में पर बदन से है जुदा ।

ऐसी दिखलाए भला कुदरत कोई ॥ २ ॥

दे नहीं सकता मुझे ज़िल्लत कोई ।

दे नही सकता मुझे इज्जत कोई ॥ ३ ॥

मैं हूं वह रूहे लतीफो बे नियाज़
मुझको दुनियां की नहीं हाजत कोई ॥ ४ ॥
औसरी हर रंग में हम रंग हूं ।
सादगी मुझ में न है रंगत कोई ॥ ५ ॥

४८

( राग ) क़व्वाली ( ताल ) कहरवा ( चाल ) है बहारे बाग़
दुनियाँ चन्द रोज ।

कब कहा मैंने कि मुश्ते खाक हूं ।
आत्मा हूं और रूहे पाक हूं ॥ १ ॥
हसरते जन्नत, न दोज़ख़ का ख़तर ।
हर तरह से खौफ हूं बे बाक हूं ॥ २ ॥
कौन कहता है कि मैं नादान हूं ।
मै सरापा अक़्ल हूं इद्राक हूं ॥ ३ ॥
दीन दुनियां मे नहीं मतलब मुझे ।
मैं न शादां हूं न मैं ग़मनाक हूं ॥ ४ ॥
मैं न उरयानी से कुछ बदनाम हूं ।
मै न मोहताजे ज़रो पोशाक हूं ॥ ५ ॥
हो नहीं सकती मुझे फ़िक्रे मुआश ।
बे नियाजे खुर्दनो खूराक हूं ॥ ६ ॥

नाम अपना क्या बताऊं कौसरी ।
आत्मा हूं और रूहे पाक हूं ॥ ७ ॥

४९

(राग) क़व्वाली (ताल) कहरवा (चाल) है बहारे बाग़ दुनिया चंद रोज़ ।

हूं सरापा और सरासर आत्मा ।
सात तत्वन में हूं बरतर आत्मा ॥ १ ॥
मैं मुसलमानों में रूहे पाक हूं ।
हिन्दुओं में हूं पवित्तर आत्मा ॥ २॥
आंख हो या कान हो या नाक हो ।
सब हवासों की है अफ़सर आत्मा ॥ ३ ॥
तन कसीफ़ और रूह है बिलकुल लतीफ़ ।
जिस्म कांटा है गुलेतर आत्मा ॥ ४ ॥
रूह यह नूरे तजल्ली है कहीं ।
है कहीं खुर्शीद खावर आत्मा ॥ ५ ॥
है शरर यह रूह पत्थर जिस्म है ।
है बदन तलवार जौहर आत्मा ॥ ६ ॥
गर कोई पूछे तो कहदूं कौसरी
आत्मा हूं और मुकर्रर आत्मा ॥ ७ ॥

५०

(राग) क़व्वाली (ताल) कहरवा (चाल) इलाजे दर्दे दिल
तुमसे मसीहा हो नहीं सकता।

कहीं वेदोंका पण्डित हूं कहीं उस्ताद कुरां हूं।
कहीं हूं धर्म हिन्दू का कहीं मुस्लिम का ईमां हूं ॥१॥
न कुछ है इब्तदा मेरी न कुछ है इन्तहा मेरी।
कभी मशरक़ में ज़ाहिर हूं कभी मग़रिब में पिनहां हूं॥२॥
न मिट्टी से हुआ पैदा न मिट्टी में मिलूंगा फिर।
कभी मैं माह तावां हूं कभी महरे दरख्शां हूं ॥ ३ ॥
कहीं रूहे मुक़द्दस हूं कहीं शुद्ध आत्मा हूं मैं।
कहीं हिन्दू का मन हूं मैं कहीं क़ल्बे मुसलमां हूं ॥४॥
मैं हूं वह आत्मा अय कौसरी जिसको नहीं मृत्यु।
बबातिन नूरे कामिल हूं बज़ाहिर गर्चे इन्सां हूं ॥ ५ ॥

५१

(राग) कव्वाली (ताल) कहरवा (चाल) इलाजे दर्दे दिल
तुम से मसीहा हो नहीं सकता॥

नहीं इतनी ख़बर मुझको कि क्या मैं हूं कहां मैं हूं।
कहीं हूं आत्मा देखो कहीं रूहे जहां मैं हूं ॥ १ ॥

ज़मीं पर हूं कभी जर्रा फ़लक पर हूं कभी सूरज ।
कभी तिफ़ले दबिस्तां हूं कभी पीरे मुग़ां मैं हूं ॥२॥

न हिन्दू न ईसाई मुसलमां हूं न तरसाई ।
कभी ऊपर ज़मींके गैं कभी जेर आस्मां मैं हूं ॥ ३॥

तु ख़ुद को कौसरी पहिचानले गर होश है तुझको ।
न ग़ैरों को समझ तू दोस्त तेरा महरवां मैं हूं ॥४॥

---

* इति श्री चौधरी दल्लूराम "कौसरी" रचित *
॥ भजन समाप्तम् ॥

## ५२

( राग ) छाया लघत्व देश ( ताल ) कहरवा ( चाल ) चादर झीनी राम, रामनाम रस भीनी ॥

चेतन देले दान, हां हां चेतन देले दान,
मान मान यश लेले ॥ टेक ॥

ग्राम ग्राम में खोल मदरसे, कुछ विद्या का देले दान ।
नगर नगर में कालिज रचकर, नर भव का फल ले ले
लेले लेले मान ॥ १ ॥

गली गली सरस्वती भंडारा, कर कर पुस्तक भेले मान ।
दूर करो पाखंड जगत का, ज्ञान सिखा कर चेले चेले
चेले मान ॥ २ ॥

घर घर में जिन शासन चरचा, आठ पहर हर वेले मान ।
न्यामत तज आलस पारस क, चरण कमल को सेले सेले
सेले मान ॥ ३ ॥

## ५३

( राग ) ढोला ( ताल ) कहरवा ( चाल ) सांवरिया ढोला आन तो जगाई वैरी नींद में ॥

म्हारी हांरी बहनों भोजन ना कीजे प्यारी रात को ॥ टेक॥

यामे दोष बड़ा री बहनों,
मानो जिनवाणी प्यारी बातको ॥ १ ॥

चिंटी पंखी पखेरू देखो,
पानी भी न पीवे रातको ॥ २ ॥

कहे न्यामत तजो निशि भोजन,
अंजल आदि फल पातको ॥ ३ ॥

५४

( राग ) खडताल ( ताल ) कहरवा ( चाल ) अपनी हमें भक्ती का कुछ दीजे दान ॥

बहनो जैन किरया पे, कुछ दीजे ध्यान ॥ टेक ॥

मत करनो जल अन छाना, या में फिरें जीव बहु नाना।
देखलो कर के ध्यान ॥ बहनो० ॥ १ ॥

बीन्धी लकड़ी मत जारो, मत जीव जन्तु को मारो।
तुम्हारा हो कल्यान ॥ बहनो० ॥ २ ॥

न्हा धो जिन दर्शन कीजे नरभव का लाहा लीजे।
मिले शिवपुर अस्थान ॥ बहनो० ॥ ३ ॥

नित्य धर्म कर्म चित लावो, न्यामत मत पाप कमाओ।
कही ऐसी भगवान ॥ बहनो० ॥ ४ ॥

५९

(राग) देश (ताल) कहरवा (चाल) बसी देदे कान्हा मोको मुरली देदे मोय ॥

अपने निज पद को मत खोय,
अपने निज पद को मत खोय।
चेतन मैं समझाऊं तोय,
अपने निज पद को मत खोय ॥ टेक ॥

निज आतम अनुभव तजकर मत।
पर परणति रत होय
विषय भोग में पड़ चेतन मत,
निज रस पावन खोय ॥ १ ॥

निज परभेद विज्ञान प्रकाशो
नित्य परमानन्द होय।
राग कषाय हलाहल तज कर,
पी आतम गुण तोय ॥ २ ॥

अशुभ त्याग शुभ लाग दोऊ तज,
शुद्ध अवस्था जोय।
करम कुलाचल तोड़ फोड़ कर
मोह अरि रज धोय ॥ ३ ॥

न्यामत वहिरातम गति तजदे,
अन्तर आतम होय ।
आश्रव वंध मिटादे दोनों,
परमातम पद होय ॥ ४ ॥

५६

( राग ) कवाली ( ताल—रूपक ) ( चाल ) कौन कहता है मुझे मैं नेक अतवारों में हूँ ॥

नोट—भरत का केकई से नाराज़ होना और रामचन्द्र जी के वनोवास जाने पर रंज करना ॥

अय जमीं मुझको छुपाले मैं गुनहगारों में हूं ।
टूट कर गिरजा फलक मैं आज दुखियारों में हूं ॥ १ ॥
किस तरह दिखलाऊं अपना मुंह जगत् के सामने ।
केकई माता की करनी से शरम सारों में हूं ॥ २ ॥
अय मेरी माता तेरी दुनियां से न्यारी है मती ।
तेरे कारण आज मैं देखो खतावारों में हू ॥ ३ ॥
छागया अन्धेर और घर घर में मातम पड़गया ।
देख हालत रंजोगम के मैं गिरफ़्तारों में हूं ॥ ४ ॥
रघुकुल के आज दो शमशो क़मर जाते रहे ।
रहगया कम्बख्त मैं क़िस्मत से लाचारों में हूं ॥ ५ ॥

किस तरह बैठूं भला भाई बड़े के तख्त पर ।
मैं तो श्री रघुवीर जी के इक परिस्तारों में हूं ॥ ६ ॥
मात सीता वन में तकलीफें सहेगी किस तरह ।
क्या करुं किससे कहूं मैं सख्त लाचारों में हूं ॥ ७ ॥
न्यायमत फिर भर्त ने कर जोड़ माता से कहा ।
चलके भाई राम को लेआ मैं नाकारों मेंहूं ॥ ८ ॥

५७

( राग ) ज़िला ( ताल ) ठुमरी पजाबी ठेका ( चाल ) हाय अच्छे पिया वहां वेश बुलाओ हिन्द में जो घबरावन है ॥

नोट—केकई का भरत को लेकर वन में रामचन्द्रजी के पास जाना और वापिस आने के लिये प्रार्थना करना ॥

प्यारे सुनियो अरज मोरी घरको पधारो, तुम बिन जी कलपावन हैं ॥ टेक ॥

हुई है भूल से बेशक बड़ी खता मुझ से ।
खता भी ऐसी कि जाता नहीं कहा मुझ से ॥
भरत भी सुनते ही नाराज होगया मुझ से ।
भरत क्या सारा ज़माना ही फिरगया मुझ से ॥
हाय छोटे बड़े सब सिर धुन रोवें, निंदा के वचन सुनावन हैं ॥ १ ॥

है आज सारी अयोध्या में पड़गया मातम ।
जिधर को देखूं उधर रंजोग़म का है आलम ॥
अन्धेर राज में आये न किस तरह पर जो ।
हो दूर तुमसा रघुकुल का नैय्यरेआज़म ॥

बेटा मात सुमित्रा और कौशल्या, नैनों से नीर
वहावत है ॥ २ ॥

मैं इक तो नारी हूं दूजे गई थी मति मारी ।
बिना विचार के जो बात मुंह से उच्चारी ॥
कलंक लगना था जो सो तो लग गया मेरे ।
किसी का दोष नहीं है करमगतो न्यारी ।

देखो कर्म बड़े वलवान किसी की भी नही पार
बसावत है ॥ ३ ॥

जो होना था सो हुआ अब खयाल दूर करो ।
कसूर माफ करो और सर पै ताज धरो ॥
खड़े रहेंगे भरत चरत तेरी सेवा में ।
चमर फिरायगा लछमन खुशी से राज करो ।

न्यामत बिन सोचे करनी दुखदाई केकई खुद पछ-
तावत है ॥ ४ ॥

५८

( राग ) कवाली ( ताल ) कहरवा ( चाल ) इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

नोट—राम का भरत और केकई को जवाब देना।

अयोध्या को मेरी माता मैं उलटा जा नहीं सकता।
वचन जो कह दिया मैंने उसे उलटा नहीं सकता ॥ ॥
तेरे इस हुक्म की माता बजा तामील क्यों कर हो।
टरु अपने वचन से यह जुवां पर ला नहीं सकता ॥ २॥
भरत को राज करना है मुझे वन वन में फिरना है।
किसीसे भी लिखा तकदीर मेटा जा नहीं सकता ॥ ३ ॥
राजका कुछ नहीं अफसोस अय माता मेरे मन में।
घुवंशी के दिल मे ऐसा अरमा आ नहीं सकता ॥४॥
रघुवंशी हमेशा कौलके वातों के पूरे है।
चाहे दुनियां पलट जाये फरक कुछ आ नहीं सकता ॥५॥
चाहे सूरज भूल जाये निकलना ठीक पूरब से।
हुकम माता का पर दिल से हमारे जा नहीं सकता ॥६॥
धर्म के सामने माता राज और पाट क्या शय है।
अगर जां भी चली जाये तो शरमा आ नहीं सकता॥७॥
भरत जा राज कर भाई यही तुझको मुनासिब है
कभी फिर मैं भी आऊंगा मगर अब आ नहीं सकता ॥८॥

भरत इक धर्म से मिल जायगी दुनियां की सब नैमत
बता, है कौनसी शय जो धरम से पा नहीं सकता ॥६॥

५९

( राग ) कव्वाली ( ताल ) रूपक ( चाल ) कौन कहता है मुझे मैं नेक अतवारी हूँ ॥

जैन दल में वात्सल्यता आजकल जाती रही,
जोश हमदर्दी मुहब्बत आज कल जाती रही ॥१॥
चल बसी विद्या अविद्या सबके दिल में छा गई,
बस नुमायश रह गई लेकिन असल जाती रही ॥२॥
जैन की मर्दुम शुमारी रात दिन घटने लगी,
इसकी अब तादाद बढ़ने की शकल जाती रही ॥३॥
हैं कहां अकलंक से आलिम, पवन सुत से बली,
रात दिन की फूट में सबकी अकल जाती रही ॥४॥
दूध घी मिलता नहीं कमज़ोर सारे बन गये.
गो कुशी होने से घी मिलने की कल जाती रही ॥५॥
व्यर्थ व्यय करने के तो लाखों दफ्तर खुल गये,
जैन कौलिज की मगर बिलकुल मिसल जाती रही ॥६॥
क्यों नहीं खुलता है कौलिज देर है किस बात की,

दिन मुहूरत देखने की क्या रमल जानी रही ॥७॥
खाने जंगी छोड़ विद्या की तरक्क़ी कीजिये,
अबतो दीगाम्बर स्वेताम्बर की भी शन्य जाती रही ॥८॥
अब तो कॉलिज को विचारो मिलके आगे के लिये,
न्यायमत जाने दो जो कुछ आज कल जाती रही ॥९॥

६

(राग) क़वाली (ताल) कहरवा (चाल) इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ॥

प्रभू ऐसा धरम हृदय में मेरे कूट कर भरदे,
न छोड़ूं गर कोई बदले में दुनिया भी नज़र करदे ॥१॥
न संशय कोई पैदा हो न दिल दुनिया पे शैदा हो,
यक़ीं सादिक़ हवैदा हो पवित्तर आत्मा करदे ॥२॥
न नफ़रत हो न शिकवा हो न शेवा ऐबजोई का,
सरापा ऐब पोशीका हमारे दिल में घर करदे ॥३॥
बख़ीली न कंजूसी हसद कीना दिला ज़ारी,
न दिल में बद गुमानी हो कोई ऐसा असर करदे ॥४॥
प्राणी मात्र का हूं खैरख्वाह दुखियों का हामी हूं,
गुणी लोगों का शायक़ हूं यही मुझमें हुनर करदे ॥५॥

राम जैसा बनूं गम्भीर आज्ञाकार लछमन सा,
खुशी गम सब बराबर हों मेरा ऐसा जिगर करदे ॥६॥
मेरे दिल में तमन्ना हो न दौलत की न हशमत की,
शबे तारीक पापों की हटाकर के सहर करदे ॥७॥
हो केवल ज्ञान पैदा एकदिन हृदय में न्यामत के,
वीतरागी दशा करके हमेशा को अमर करदे ॥८॥

६१

(राग) कवाली (ताल) कहरवा (चाल) इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ॥

वह कब आएगा दिन जिस दिन करूं श्रद्धान श्रीजिनका
गुरू का तत्वका निज आत्मा का जैन शासन का ॥१॥
किसी को देख कर दुखिया हो करुणा रस का बल ऐसा
धराथा जिस तरह विष्णुकुमार आकार वामन का ॥२॥
राम जैसी हो गर गम्भीरता पैदा मेरे मन में
तो आज्ञाकार दिल ऐसा बने जैसा था लछमन का ॥३॥
नज़र जाये नहीं हरगिज़ कभी गैरों के ऐबों पर,
ऐब पोशीकी आदत हो ख़याल आये न अवगुण का ॥४॥
राग अरु द्वेष का बिलकुल भाव जाता रहे दिल से,
नज़र आने लगे नकशा बराबर यार दुश्मन का ॥५॥

न हो पैदा ख़याल हरगिज़ मुझे दुनिया की बातों का,
वहां घूमे सर मेरा जिसजा हो चरचा जैन शासन का ॥६॥
न कानों मे पड़े बात इश्किया क़िस्से कहानी की,
सुनूं मैं रात दिन चारित्र धरमो वीर पुरुषन का ॥७॥
बुराई के लिये हो जाय बंद इकदम ज़ुबां मेरी,
वहां खोलूं ज़ुबां जिस जा पे निर्णय होय तत्वन का ॥८॥
सुखी परजा रहे न्यामत विजय हो जार्ज पंजम की,
दूर दुनिया से हों सब रंजोग़म, हो अन्त दुश्मन का ॥९॥

---

* इति श्री जैन भजन रत्नावली *
( न्यामत विलास अङ्क २ )
समाप्तम्

---

पुस्तक मिलने का पता:—
**Niamat Singh Jain**
*Secretary District Board*
HISSAR (DIST.)
*Punjab.*

# नोटिस

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रन्थमाला के निम्न लिखित २० अंक ( हिस्से ) तय्यार किये गए हैं। मगर अभी नक सिर्फ वह ही हिस्से छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है।

| अंक | नाम अंक | नागरी | उर्दू |
|---|---|---|---|
| १ | जिनेन्द्र भजन माला . | ।) | |
| २ | जैन भजन रत्नावली . | ।) | |
| ३ | जैन भजन पुष्पावली ... | | |
| ४ | पञ्चकल्याणक नाटक | | |
| ५ | न्यामत नीति | | |
| ६ | भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक। | | |
| ७ | जैन भजनमुक्तावली, | =) | |
| ८ | राजल भजन एकादशी . | -) | |
| ९ | खो गायन जैन भजन पच्चीसी | =) | |
| १० | कलियुगलीला भजनावली | =) | -)॥ |
| ११ | कुन्ती नाटक | =) | |
| १२ | चिदानन्द शिवसुन्दरी नाट | ॥=) | ।=) |
| १३ | अनाथ रुदन | -) | |
| १४ | जैन कालिज भजनावली | | |
| १५ | रामचरित्र भजन मञ्जरी | | |
| १६ | राजल वैराग्य माला | | |
| १७ | ईश्वर स्वरूप दर्पण | | |
| १८ | जैन भजन शतक | ।) | |
| १९ | थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी | =) | =) |
| २० | मैना सुन्दरी नाटक | १॥) | |
| | .. सजिल्द | १।॥) | |

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्टबोर्ड, मु० हिसार (पंजाब)

पण्डित अनन्तराम के प्रबन्ध से
अनन्तराम और साठे के
सद्धर्म्म प्रचारक यन्त्रालय-देहली मे छपा ।